॥राम॥ ॥राम॥

राष्ट्र कल्याण एवं भारतवर्ष से समस्त आसुरी तत्वों के दमन हेतु

श्री हनुमत शक्ति जागरण अभियान - दिव्यास्त्र प्रयोग

प्रत्येक रविवार प्रातः 5.00 बजे, 108 श्री बजरंग बाण अभियान

॥ श्री बजरंग बाण ॥

पाठ विधि :- प्रातः या सांय स्नान करे अथवा हाथ पैर धोयें।
पूजाघर में उत्तर या पूर्व मुख होकर हनुमान जी के चित्र के आगे धूप दीप जलायें।
भूने हुए या भीगे हुए चने का भोग लगायें और हाथ में जल लेकर संकल्प करें।
यह संकल्प सिर्फ एक बार करना है, प्रतिदिन नहीं।

संकल्प :-
मैं (अपना पूरा नाम) नामक आराधक श्री हनुमान जी की प्रसन्नता हेतु 108 श्री बजरंग बाण पाठ करने का संकल्प कर रहा हुँ (ऐसा बोलकर भूमि पर जल छोड़ दें) उसके बाद पाठ आरम्भ करें।

॥ निश्चय प्रेम प्रतीति ते विनय करे सनमान । तेहि के कारज सकल शुभ सिद्ध करे हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी । सुनि लिजै प्रभु विनय हमारी ॥
जन के काज विलंब न कीजै । आतुर दौरी महासुख दिजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु के पारा । सुरसा बदन पैठि विस्तारा ॥
आगे जाय लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुरलोका ॥

जाय विभिषण को सुख दिन्हा । सीता निरखि परमपद लिन्हा ॥
बाग उजारि सिन्धु मह बोरा । अति आतुर जम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारी संहारा । लूम लपेटी लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ॥

अब विलंब केहि कारण स्वामी । कृपा करहु उर अन्तरयामी ॥
जय जय लखन प्राण के दाता । आतुर है दुख करहु निपाता ॥
जय हनुमान जयति बलसागर । सुर-समुह समरथ भटनागर ॥
हनु हनु हनु हनुमन्त हठिलै । बैरिहि मारू वज्र की कीलै ॥

हीं हीं हीं हनुमन्त कपिसा । हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा ॥
जय अन्जनी कुमार बलवन्ता । संकरसुवन वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रति पालक ॥
भूत प्रेत पिसाच निशाचर । अगनि बेताल काल मारी मर ॥

इन्हे मारू तोहि सपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ॥
सत्य होहु हरि सपथ पाय के । रामदूत धरू मारू धाय कै ॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा । दुख पावत जन के हि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा । नहि जानत कछु दास तुम्हारा ॥

वन उपवन मग गिरी गृह माही । तुम्हरे बल हम डरपत नाही ॥
जनकसुता हरि दास कहावौ । ता की सपथ विलंब न लावौ ॥
जय जय जय धुनि होत अकासा । सुमिरत होय दुसह दूख नासा ॥
चरन पकरी कर जोरी मनावौ । यह औसर अब केहि गोहरावौ ॥

उठ उठ चलु तोहि राम दोहाई । पाय परौ कर जोरी मनाई ॥
चम चम चम चम चपल चलन्ता । हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥
हं हं हांक देत कपि चंचल । सं सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय अनन्द हमारौ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहौ फिर कवन उबारे ॥
पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जौ जापै । तासों भूत प्रेत सब काँपै ॥
धुप देय जो जपै हमेशा । ता के तन नही रहै कलेशा ॥

उर प्रतीति दृड़ सरन है, पाठ करै धरि ध्यान । बाधा सब हर करै शुभ, काम सकल हनुमान ॥

॥ श्री रामचन्द्र भगवान की जय ॥ पवनसुत हनुमान की जय ॥

श्रद्धेय स्वामी रूपेश्वरानन्द जी

स्वामी रूपेश्वरानन्द जी के नेतृत्व में सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु सहयोग करें

नित्यदान करें ..... मासिक 300/-
9817777108 Paytm Google Pay PhonePe
UPI id - sw27@axisbank

अधिक जानकारी के लिए कृपया इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

आश्रम - बलुआ, चंदौली - वाराणसी (उत्तरप्रदेश) 84396 77108, 76072 33230

अधिक जानकारी के लिए देखें www.swamirupeshwaranand.in FOLLOW US ON

॥राम॥ ॥राम॥